International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 4, July-August, 2026

समकालीन हिन्दी आलोचना में करुणाशंकर उपाध्याय का योगदानः एक अध्ययन

प्रियंका दहिया[1], डॉ० सुमन[2]

[1]शोधकर्त्री, हिन्दी विभाग, मानविकी संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा – 124021

[2]सह आचार्य, हिन्दी विभाग, मानविकी संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा – 124021

सारांश

समकालीन हिन्दी आलोचना ने साहित्य के बदलते स्वरूप, सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक विमर्श तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य को नई दृष्टि प्रदान की है। इस परंपरा में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय एक महत्वपूर्ण आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी आलोचना–दृष्टि भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा और पाश्चात्य आलोचना–सिद्धांतों के समन्वय पर आधारित है। उन्होंने हिन्दी कविता, कथा–साहित्य, साहित्यिक सिद्धांत, तुलनात्मक साहित्य तथा वैश्विक संदर्भों में हिन्दी भाषा और साहित्य के विविध आयामों का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनकी आलोचना तर्कसंगत, वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक तथा मूल्यपरक दृष्टिकोण का परिचय देती है।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य समकालीन हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय के योगदान का समालोचनात्मक अध्ययन करना है। इसमें उनकी प्रमुख आलोचनात्मक कृतियों, विचार–दृष्टि, आलोचना–पद्धति, साहित्यिक अवधारणाओं तथा हिन्दी आलोचना पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध–पद्धति का उपयोग किया गया है। साथ ही, उपलब्ध पुस्तकों, शोध–लेखों एवं अन्य द्वितीयक स्रोतों के आधार पर उनके आलोचनात्मक अवदान का मूल्यांकन किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने हिन्दी आलोचना को नवीन वैचारिका आधार प्रदान किया है। उनकी आलोचना साहित्य को केवल सौंदर्यबोध तक सीमित न रखकर सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा वैश्विक संदभों में देखने का आग्रह करती है। समकालीन हिन्दी आलोचना के विकास में उनका योगदान उल्लेखनीय है और उनके आलोचनात्मक चिंतन ने हिन्दी साहित्य के अध्ययन को नई दिशा प्रदान की है। इसलिए उनका साहित्य और आलोचना दोनों ही क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है।

कुंजी शब्द : समकालीन हिन्दी आलोचना, करुणाशंकर उपाध्याय, आलोचनात्मक चिंतन, साहित्यिक समीक्षा, हिन्दी आलोचना, भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, तुलनात्मक अध्ययन।

भूमिका

हिन्दी साहित्य में आलोचना एक महत्त्वपूर्ण विधा है, जो साहित्यिक कृतियों के मूल्याकन, विश्लेषण तथा व्याख्या के माध्यम से साहित्य की दिशा और विकास को निर्धारित करती है। समय के साथ हिन्दी आलोचना का स्वरूप निरंतर विकसित हुआ है। समकालीन हिन्दी आलोचना विशेष रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा वैचारिक परिवर्तनों के आलोक में साहित्य का अध्ययन करती है। इसने पारंपरिक मानदंडों से आगे बढ़कर स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श, उत्तर–औपनिवेशिक चिंतन, वैश्वीकरण तथा तुलनात्मक साहित्य जैसे नए आयामों को भी अपने अध्ययन का विषय बनाया है।

समकालीन हिन्दी आलोचना के विकास में अनेक विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी क्रम में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय परंपराओं के समन्वित अध्ययन के माध्यम से हिन्दी आलोचना को व्यापक वैचारिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया है। उनकी आलोचना वस्तुनिष्ठता, तार्किकता तथा गहन अध्ययन पर आधारित है। उनकी प्रमुख कृतियों–आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य चिंतन, पाश्चात्य काव्य चिंतन तथा हिन्दी का विश्व सन्दर्भ–समकालीन हिन्दी आलोचना की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में गिनी जाती हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य समकालीन हिन्दी आलोचना में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय के योगदान का समालोचनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में उनकी आलोचना–दृष्टि, प्रमुख कृतियों, साहित्यिक अवधारणाओं तथा हिन्दी आलोचना पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया जाएगा। यह शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा इसमें उनकी प्रकाशित कृतियों एवं अन्य प्रामाणिक द्वितीयक सोर्ता का उपयोग किया जाएगा। यह अध्ययन समकालीन हिन्दी आलोचना की प्रवृत्तियों को समझने के साथ–साथ डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय के आलोचनात्मक अवदान का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयास करता है

समकालीन हिन्दी आलोचनाः अवधारणा एवं स्वरूप

समकालीन हिन्दी आलोचना हिन्दी साहित्य की वह सशक्त बौद्धिक परंपरा है, जो आधुनिक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा वैचारिक परिवर्तनों के संदर्भ में साहित्य का विश्लेषण, मूल्यांकन और पुनर्पाठ करती है। सामान्यतः 'समकालीन' शब्द का अर्थ अपने समय रो रांबद्ध मा बर्तगान युग की परिस्थितियों के अनुरूप होता है। अतः समकालीन हिन्दी आलोचना का आशय ऐसी आलोचना से है, जो अपने समय की चुनौतियों, संवेदनाओं, सामाजिक यथार्थ तथा वैचारिक प्रवृत्तियों को केंद्र में रखकर साहित्य का विवेचन करती है। इसका उद्देश्य केवल साहित्यिक कृतियों के गुण–दोषों का मूल्यांकन करना नहीं, बल्कि उनके राागाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहारिक और गानवीय संदर्भों की गहन व्याख्या करना भी है।

समकालीन हिन्दी आलोचना का स्वरूप बहुआयामी एवं अंतर्विषयक है। यह साहित्य को समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान, राजनीति, संस्कृति तथा भाषा विज्ञान जैसे विभिन्न ज्ञान–विषयों से जोड़कर देखती है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हिन्दी आलोचना में मार्क्सवादी, संरचनावादी, उत्तर–संरचनावादी, नारीवादी, दलित, आदिवासी, उत्तर–औपनिवेशिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन जैसी विविध आलोचनात्मक दृष्टियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन दृष्टियों ने हिन्दी आलोचना को अधिक व्यापक, लोकतांत्रिक और बहुलतावादी स्वरूप प्रदान किया है।

समकालीन हिन्दी आलोचना की प्रमुख विशेषताओं में वस्तुनिष्ठता, तर्कशीलता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पाठ–केंद्रित विश्लेषण, सामाजिक सरोकार, वैचारिक बहुलता तथा मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता प्रमुख हैं। यह आलोचना साहित्य को केवल सौंदर्यबोध की वस्तु नहीं मानती, बल्कि उसे समाज, संस्कृति और इतिहास का जीवंत दस्तावेज भी मानती है। इसलिए समकालीन आलोचक साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन उनके सामाजिक प्रभाव, वैचारिक आधार, भाषिक संरचना तथा सांस्कृतिक महत्त्व को ध्यान में रखकर करते हैं।

हिन्दी आलोचना की इस समृद्ध परंपरा में अनेक विद्वानों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। समकालीन आलोचना का मूल उद्देश्य साहित्य और समाज के मध्य सार्थक संवाद स्थार्पित करना तथा साहित्य की प्रासंगिकता को नए संदर्भों में स्पष्ट करना है। इसी परिप्रेक्ष्य में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का आलोचनात्मक चिंतन भी महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है, क्योंकि उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचना–दृष्टियों के समन्वय के माध्यम से साहित्य के बहुआयामी अध्ययन पर बल दिया है। इस प्रकार समकालीन हिन्दी आलोचना का स्वरूप निरंतर विकसित, गतिशील और परिवर्तनशील है, जो साहित्य के साथ–साथ समाज की बदलती चेतना को भी अभिव्यक्त करता है।

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय समकालीन हिन्दी के प्रतिष्ठित आलोचक, अध्येता और साहित्य–चिंतक हैं। उनका जन्म 15 अप्रैल 1968 को घोरका तालुकदारी, शिवगढ़, जनपद प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने हिन्दी

विषय में एम.ए., पीएच.डी. तथा एस.ई.टी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्येतावृत्ति के अंतर्गत श्पाश्चात्य काव्य–चिन्तन के विविध आन्दोलनश विषय पर पोस्ट–डॉक्टोरल शोध किया तथा श्हिन्दी आचार्य कवियों का काव्यशास्त्रीय चिन्तनश विषय पर यूजीसी के बृहद् शोध–प्रकल्प का संचालन किया।

डॉ. उपाध्याय का व्यक्तित्व एक गंभीर शोधकर्ता, संतुलित आलोचक और साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध अध्येता का है। उनकी आलोचना–दृष्टि भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा और पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धांतों के समन्वय पर आधारित है। वे साहित्य को केवल सौन्दर्यबोध का विषय न मानकर उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैचारिक आयामों के साथ समझने पर बल देते हैं। उनकी लेखन–शैली विश्लेषणात्मक, तर्कपूर्ण और प्रमाण–आधारित है, जिसके कारण उनकी कृतियाँ शोधार्थियों और अध्येताओं के लिए उपयोगी मानी जाती हैं।
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का कृतित्व अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियों में सर्जना की परख, साहित्यकार बेकल रू संवेदना और शिल्प, आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य–चिन्तन, मध्यकालीन काव्य–चिन्तन और संवेदना, पाश्चात्य काव्य–चिन्तन, विविधा, आधुनिक कविता का पुनर्पाठ, हिन्दी कथा–साहित्य का पुनर्पाठ, आवाँ रू विमर्श, हिन्दी साहित्यरू मूल्य और मूल्यांकन, वक्रतुंड मिथक की समकालीनता, ब्लैक होल रू विमर्श, माया गोविन्दः सृजन के अनछुए सन्दर्भ तथा साहित्य और संस्कृति के सरोकार जैसी पुस्तकें शामिल हैं। इन कृतियों में हिन्दी आलोचना, काव्यशास्त्र, कथा–साहित्य, मिथक, संस्कृति और समकालीन साहित्यिक विमर्शों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

समकालीन हिन्दी आलोचना में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का महत्त्व इस बात में निहित है कि उन्होंने आलोचना को व्यापक वैचारिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने का प्रयास किया। उनकी कृतियाँ भारतीय साहित्यिक परंपरा और आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टियों के बीच संवाद स्थापित करती हैं। इस कारण उनका व्यक्तित्व और कृतित्व समकालीन हिन्दी आलोचना के अध्ययन में विशेष महत्त्व रखता है।

करुणाशंकर उपाध्याय का आलोचनात्मक चिंतन

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का आलोचनात्मक चिंतन समकालीन हिन्दी आलोचना में एक संतुलित, अध्ययनपरक और बहुआयामी दृष्टि का परिचायक है। उनकी आलोचना का आधार भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा तथा पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धांतों का समन्वय है। वे साहित्य को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे समाज, संस्कृति, इतिहास और मानवीय मूल्यों से गहराई से जुड़ी सृजनात्मक प्रक्रिया मानते हैं। उनके अनुसार किसी भी साहित्यिक कृति का मूल्यांकन उसके युग–संदर्भ, वैचारिक आधार, कलात्मक संरचना तथा सामाजिक प्रभाव को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

डॉ. उपाध्याय की आलोचना का प्रमुख गुण उसकी वस्तुनिष्ठता और तर्कशीलता है। वे किसी भी रचना का मूल्यांकन पूर्वाग्रह या वैचारिक आग्रह के आधार पर नहीं करते, बल्कि रचना की अंतर्वस्तु, शिल्प, भाषा, संवेदना तथा सांस्कृतिक संदर्भों का संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। उनकी दृष्टि में आलोचना का उद्देश्य केवल गुण–दोषों का उल्लेख करना नहीं, बल्कि रचना के अंतर्निहित अर्थ, उसकी सृजनात्मक शक्ति तथा साहित्यिक महत्त्व को उद्घाटित करना है।

उनके आलोचनात्मक चिंतन में भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पाश्चात्य काव्य–चिन्तन जैसी कृति में उन्होंने यूनानी परंपरा से लेकर आधुनिक पाश्चात्य आलोचना तक के प्रमुख सिद्धांतों का क्रमबद्ध एवं विश्लेषणात्मक विवेचन किया है। इसी प्रकार आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य–चिन्तन में आधुनिक हिन्दी कविता के वैचारिक, कलात्मक और सौन्दर्यात्मक पक्षों का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इन कृतियों से स्पष्ट होता है कि वे साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक और बहुविषयी दृष्टिकोण को महत्त्व देते हैं।

डॉ. उपाध्याय का आलोचनात्मक चिंतन समकालीन साहित्यिक विमर्शों के प्रति भी सजग है। वे साहित्य को बदलते सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा वैश्विक संदर्भों से जोड़कर देखते हैं। यद्यपि उपलब्ध प्रकाशित स्रोतों के आधार पर यह कहना उचित होगा कि उनकी कृतियाँ साहित्य और संस्कृति के अंतर्संबंधों,

आलोचना की पद्धति तथा काव्यशास्त्रीय चिंतन को विशेष महत्त्व देती हैंय अतः उनके विचारों को किसी विशिष्ट वैचारिक धारा से जोड़कर प्रस्तुत करने के लिए अतिरिक्त प्रमाण अपेक्षित होंगे।

समग्रतः डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का आलोचनात्मक चिंतन हिन्दी आलोचना को संतुलित, तुलनात्मक और शोधपरक दृष्टि प्रदान करता है। उनकी आलोचना साहित्य के सौन्दर्य, वैचारिकता और सामाजिक प्रासंगिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। इसी कारण उनका आलोचनात्मक अवदान समकालीन हिन्दी आलोचना के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

समकालीन हिन्दी आलोचना में योगदान

समकालीन हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का योगदान उनकी आलोचनात्मक दृष्टि, सैद्धान्तिक स्पष्टता तथा साहित्य के बहुआयामी विश्लेषण के कारण विशेष महत्त्व रखता है। उन्होंने हिन्दी आलोचना को केवल साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन तक सीमित न रखकर उसे भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धांतों तथा समकालीन साहित्यिक विमर्शों के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया। उनकी आलोचना का आधार गहन अध्ययन, प्रमाण–आधारित विवेचन और संतुलित दृष्टिकोण है, जो शोधपरक लेखन की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

डॉ. उपाध्याय की प्रमुख कृतियाँ – आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य–चिन्तन, पाश्चात्य काव्य–चिन्तन, हिन्दी कथा–साहित्य का पुनर्पाठ, आधुनिक कविता का पुनर्पाठ तथा साहित्य और संस्कृति के सरोकार–हिन्दी आलोचना के विभिन्न आयामों को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य आलोचना–दृष्टियों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया तथा साहित्य के मूल्यांकन के लिए व्यापक बौद्धिक आधार उपलब्ध कराया। विशेष रूप से काव्यशास्त्र और आलोचना–सिद्धांत के क्षेत्र में उनका लेखन हिन्दी के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी अध्ययन सामग्री सिद्ध हुआ है।

उनकी आलोचना का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे साहित्य को उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में समझने पर बल देते हैं। वे मानते हैं कि साहित्य अपने समय की चेतना का प्रतिनिधि होता है, इसलिए उसका मूल्यांकन भी युगीन परिस्थितियों और मानवीय मूल्यों के आलोक में किया जाना चाहिए। इसी कारण उनकी आलोचना में वस्तुनिष्ठता, तार्किकता तथा समन्वयवादी दृष्टि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

समकालीन हिन्दी आलोचना में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का योगदान विशेष रूप से आलोचना के सैद्धान्तिक आधार को सुदृढ़ करने, तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहित करने तथा साहित्य और संस्कृति के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करने में निहित है। उनकी कृतियाँ हिन्दी आलोचना को अधिक व्यापक, शोधपरक और समकालीन बनाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। इस दृष्टि से उनका आलोचनात्मक अवदान समकालीन हिन्दी आलोचना की विकास–यात्रा में उल्लेखनीय स्थान रखता है तथा भविष्य के शोधार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समकालीन हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा तथा पाश्चात्य आलोचना–सिद्धांतों के समन्वित अध्ययन के माध्यम से हिन्दी आलोचना को व्यापक वैचारिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया। उनकी आलोचना वस्तुनिष्ठता, तार्किकता, शोधपरक दृष्टि तथा साहित्य के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों की गहन समझ पर आधारित है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हिन्दी आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष को समृद्ध करने के साथ–साथ आधुनिक हिन्दी कविता, कथा–साहित्य और आलोचना–पद्धति के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण संदर्भ प्रस्तुत करती हैं।

यह अध्ययन यह भी इंगित करता है कि डॉ. उपाध्याय का आलोचनात्मक चिंतन साहित्य को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय जीवन, समाज और संस्कृति से जुड़े व्यापक विमर्श के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। तथापि, उनके समग्र आलोचनात्मक अवदान पर अभी और विस्तृत शोध की आवश्यकता है,

विशेषकर उनकी विभिन्न कृतियों के तुलनात्मक एवं विषय–विशेष विश्लेषण के संदर्भ में। समग्रतः कहा जा सकता है कि डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने समकालीन हिन्दी आलोचना को समृद्ध करने में सार्थक योगदान दिया है और उनका साहित्यिक अवदान हिन्दी आलोचना के अध्ययन एवं शोध के लिए महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ

1. शुक्ल, रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा।
2. सिंह, नामवर, कविता के नए प्रतिमानः राजकमल प्रकाशन।
3. शर्मा, रामविलास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना. राजकमल प्रकाशन।
4. पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य और इतिहास–दृष्टि वाणी प्रकाशन।
5. त्रिपाठी, विश्वनाथ हिन्दी आलोचना राजकमल प्रकाशन।
6. भारतीय साहित्य संग्रह करुणाशंकर उपाध्याय लेखक परिचय
7. उपाध्याय, करुणाशंकर. आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य–चिन्तन.
8. उपाध्याय, करुणाशंकर. पाश्चात्य काव्य–चिन्तन.
9. उपाध्याय, करुणाशंकर. पाश्चात्य काव्य–चिन्तन. राधाकृष्ण प्रकाशन।
10. उपाध्याय, करुणाशंकर. आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य–चिन्तन.
11. उपाध्याय, करुणाशंकर. साहित्य और संस्कृति के सरोकार.
12. सिंह, नामवर. कविता के नए प्रतिमान. राजकमल प्रकाशन।
13. शर्मा, रामविलास. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना. राजकमल प्रकाशन।
14. उपाध्याय, करुणाशंकर. पाश्चात्य काव्य–चिन्तन. राधाकृष्ण प्रकाशन।
15. उपाध्याय, करुणाशंकर. आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य–चिन्तन. क्वालिटी बुक्स।
16. उपाध्याय, करुणाशंकर. हिन्दी कथा–साहित्य का पुनर्पाठ. राधाकृष्ण प्रकाशन।
17. उपाध्याय, करुणाशंकर. साहित्य और संस्कृति के सरोकार. राधाकृष्ण प्रकाशन।
18. सिंह, नामवर. कविता के नए प्रतिमान. राजकमल प्रकाशन।